

BA-III
मैथिली साहित्य
पाठ्यपुस्तक

Lecture - II

श्री ० श्रीमान् कुमार रमि
मैथिली (सहायक प्रध्यापक) ७/१७
मैथिली विभाग

V.S.S. College, Rishikesh
Mithila University (U.M.U.)

समानाद्य शब्द इत्यादि :- आचार्य समानाद्य

शब्द इत्येतत् शब्दस्य अर्थः (पाठ्य पुस्तक) । साहित्य विभाग
पीठे प्रकाशितं भवति । विशेषतः अनुसंधानात्मक निबन्ध
सूची संकलनम् । निबन्धनात्मक तथा प्रबंध संग्रह
अनुवाक्य ग्रंथः महावर्षात् आदि विधापत्रिक पुस्तक-परिचय
पीठपत्रिका आदि आधारेण चिन्ता पोषी विक -
उपेयन - कथा आदि अन्वेषणम् । संकलनम् - संपादनम्
प्रमुख आदि - मैथिली पद्य-संग्रह, मैथिली गद्य-संग्रह
(नवीन - भाग) , कविता, कुतुम्भ, चान्चल्यम्, पुष्पाकारम्,
नवीन गीत आदि । व्याकरण आदि इत्यादि पोषी मिथिला-
भाषा प्रकाशक आचार्यः । अन्तर्गत - कुल - प्रकाश,
मैथिली वर्तमान साहित्य, मैथिली गद्य प्रकाश । प्रथम
विविध विधातु पुस्तक प्रकाशनात् तथा नवीनतु पुस्तक
सर्वे चर्चा सातु । मिथिला भाषा - साहाय्य आदि पुस्तक
प्रकाशक आदि ।

मिथिली आ आंग्लिक सहै विक सिद्ध

पोली प्रकारात आहे - शिकीली वाखाणे ही पुढी
 उपरचा, Telos from Vidyapati तथा साहित्य
 साहित्य 'A History of Indian Literature' शिकीली
 Vidyapati ही पोलीत अध्याय हात - आठ
 भागात भाषात अनुवाद असू शकते आहे।

निबन्धमाला! आ प्रबन्धसंग्रह हा एक
 अनुबन्धानुसार निबन्ध संकलन किंवा जे निबन्ध
 अनुबन्धानुसार शिकीली मधील धारित करत आहे। निबन्ध
 मालात 600 व निबन्ध संकलन आहे - विधापति
 वंश, विधापति-शास्त्र, विधापतिक वंशानुसार - विधापतिक
 की विधापति वंशानुसार हा हा। फार त्या ज्योतिषीय
 फार त्या किंवा प्रकारात साहित्यिक निबन्ध किंवा
 मधील एवढे लक्ष्य अनुबन्धानुसार आहे।
 एवढा शिकीली ही पोलीत पांचवीत शिकीली
 विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक शोध प्रबन्ध आहे, जे
 पांचवीत विधापति-विषयक संकलन आहे।

प्रबन्धसंग्रह में पांच गीत शोध प्रबन्ध
 आहे जे वेदही शिकीली हा भाषांतर प्रथम
 भाषांतर-सहाय-साहित्यमालात आणता
 शिकीली आ पढल गेले आहे। पांचो निबन्ध

